DSSSB TGT & PGT
Part-B
SCHOLAR BATCH
संस्कृत
भाषा विज्ञान का परिचय
Part -2
LIVE
11-04-2024 04:00 PM

भाषा-विज्ञान

1. दिव्योत्पत्ति-सिद्धान्त
2. सङ्केत-सिद्धान्त
3. रणन-सिद्धान्त
4. ध्वन्यनुकरण-सिद्धान्त

4. ध्वन्यनुकरण-सिद्धान्त

1786

5. आवेग-सिद्धान्त

- इस सिद्धान्त को 'मनोभावाभिव्यक्तिवाद, मनोरागव्यञ्जक शब्दमूलकतावाद, पूह-पूह सिद्धान्त, मनोभावाभि- व्यञ्जकतावाद आदि के नाम से जाना जाता है।

- इसके अनुसार आरम्भ में मनुष्य भाव प्रधान था और प्रसत्रता, दुःख, विस्मय, घृणा आदि के भाववश उसके मुख से ओ, छि, धिक्, आह आदि शब्द सहज ही निकले। धीरे-धीरे इन्हीं से भाषा का विकास हुआ।

समीक्षा- इसको माननें में निम्न कठिनाइयाँ हैं-

1. ये शब्द विचारपूर्वक प्रयुक्त नहीं होते हैं बल्कि आवेग की तीव्रता में अनायास निकल पड़ते हैं।

2. भिन्न-भिन्न भाषाओं में ऐसे शब्द एक रूप में नहीं मिलते यदि स्वभावतः निकलते तो सभी मनुष्यों में लगभग एक समान होते।

3. भाषा में आवेग शब्दों की संख्या 40-50 से अधिक नहीं होगी इन शब्दों से पूरी भाषा पर प्रकाश नहीं पड़ता। अतः इनको पूर्णतः भाषा का अंग नहीं माना जा सकता। यह भी समस्या को समाप्त करने में असमर्थ है।

6. श्रम-ध्वनि-सिद्धान्त

- इसे यो-हे-हो-वाद, श्रम-परिहरणमूलकतावाद भी कहा जाता है। इनके प्रतिपादक 'न्वायर' (न्वारे) नामक भाषाशास्त्री हैं।

- इनके अनुसार 'परिश्रम का कार्य करते समय साँस तेजी से बाहर-भीतर आने-जाने, साथ-साथ स्वरतन्त्रियों को विभिन्न रूपों में कम्पित होने एवं तदनुकूल ध्वनियों उच्चरित होने से कार्य करने वाले को राहत मिलती है।

- उदाहरणार्थ कपड़ा धोते समय धोबी 'हियो' या 'छियो' कहता है और मजदूर आदि 'हो-हो, हूँ-हूँ कहते हैं।

समीक्षा-

1. यह मत भाषा की उत्पत्ति के लिए सर्वथा असन्तोष जनक है।

2. शारीरिक परिश्रम जन्य ये शब्द निरर्थक हैं। भाषा की उत्पत्ति के लिए सार्थक शब्दों की आवश्यकता है।

3. अर्थहीन शब्दों से भाषा की उत्पत्ति नहीं हो सकती। यह मत सबसे निकृष्ट और अग्राह्य है।

7. इंगित-सिद्धान्त

- इस सिद्धान्त के प्रवर्तन का श्रेय पालिनेशियन भाषा विद्वान् डॉ.'राये' को है। डार्विन भी इसके समर्थक हैं।

- प्रो. रिचर्ड इसे 'मौखिक इंगित सिद्धान्त' कहते हैं।

- इस मत के अनुसार प्रारम्भ में मानव ने अपनी आङ्गिक चेष्टाओं का ही वाणी के द्वारा अनुकरण किया और भाषा बनी। जैसे- पानी पीने के समय मुँह से 'पा' जैसी ध्वनि हुई. अतः 'पा' का अर्थ 'पीना' हुआ।

DSSSB TGT & PGT संस्कृत SCHOLAR BATCH

समीक्षा-

1. अपने अनुकरण पर शब्द रचना हास्यास्पद है। दूसरे के अनुकरण पर शब्द रचना मान्य हो सकती है।

2. हाथ, पैर, ओष्ठ आदि के आधार पर शब्द रचना की कल्पना निर्मूल है।

3. इंगित सिद्धान्त पर बने शब्दों की संख्या भाषा में बहुत कम है। यह सिद्धान्त भी सारहीन है।

8. सम्पर्क- सिद्धान्त

- इस मत के प्रतिपादक जी. रेवेज़ हैं, जो मनोविज्ञान के विद्वान् थे।

- इनके मतानुसार 'मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, उसमें पारस्परिक सम्पर्क की प्रवृत्ति जन्मसिद्ध है। प्रारम्भ में भूख आदि की अभिव्यक्ति के लिए मौखिक और साङ्केतिक अभिव्यक्ति का सहारा लिया होगा, उनसे जो ध्वनियों निकली वे धीरे-धीर भाषा बनी।'

समीक्षा-

1. प्रो॰ रेवेज का यह सिद्धान्त बालमनोविज्ञान, जीव-मनोविज्ञान और आदिम प्राणि-मनोविज्ञान पर आश्रित है एवं तर्कसंगत भी है।

2. कुछ अन्य भाषाशास्त्री भी इस मत को अमान्य नहीं करते किन्तु भाषोत्पति के प्रश्न को अनिर्णीत मानते हैं।

9. सङ्गीत-सिद्धान्त

- इसको प्रेम-सिद्धान्त, सिंग-सांग थ्योरी, woo-woo थ्योरी भी कहा जाता है।
- डार्विन, स्पेन्सर एवं स्पर्सन ने इसे कुछ रूपों में माना था।
- इनके सिद्धान्त के अनुसार, 'मानव के सङ्गीत से भाषा की उत्पत्ति हुई।"

समीक्षा-

1. गुनगुनाने से भाषा की उत्पति होना केवल अनुमान पर आश्रित है. इसका कोई प्रमाण नहीं है।

2. प्रारम्भिक व्यक्ति गुनगुनाता था, इसका भी कोई पुट आधार नहीं है। अतः यह सिद्धान्त भी अस्वीकार्य है।

10. प्रतीक-सिद्धान्त

- इस सिद्धान्त में माना जाता है कि 'संयोग से किसी शब्द का किसी अर्थ से सम्बन्ध हो जाता है, और वह शब्द उस अर्थ का प्रतीक हो जाता है।

- भाषा-विज्ञान में ऐसे शब्दों को 'नर्सरी-शब्द' कहते हैं जैसे- माता, पिता, चाचा आदि।

समीक्षा-

1. प्रतीक सिद्धान्त मूलतः भाषा के प्रारम्भिक शब्दों की व्याख्या करता है। भाषा में 'नर्सरी-शब्द' आये, ये भी सत्य है।

2. यह स्कूल शब्दों की उत्पत्ति बना सकता है, सूक्ष्म अर्थ के बोधक शब्दों की उत्पत्ति बताने में असमर्थ है।

11. समन्वय -सिद्धान्त

- इस सिद्धान्त के प्रवर्तक प्रसिद्ध भाषाशास्त्री 'हेनरी स्वीट' हैं।
- उन्होंने नये सिद्धान्त की अपेक्षा सर्वसिद्धान्त संकलन को अधिक उपयुक्त समझा है।
- उनके अनुसार 'यदि सभी सिद्धान्तों में से आवश्यक तत्त्व को एकत्रित कर लिया जाय तो भाषा की उत्पत्ति सम्वन्धी समस्याओं का निराकरण हो सकता है।'

समीक्षा-

1. भाषा की उत्पत्ति समझाने के लिए अन्य कोई एकमत शुद्ध न होने से सबका समन्वय उपयुक्त माना गया।

2. यह सिद्धान्त सामान्यतया निर्विरोध रूप से स्वीकार किया जाता है।

भाषा - विज्ञान के अंग

- भाषा-विज्ञान भाषा का सर्वांगीण अध्ययन प्रस्तुत करता है, अतः उसमें भाषा के सभी घटकों का अध्ययन होता है।
- भाषा शब्द के द्वारा उसके चार घटकों का मुख्य रूप से बोध होता है-
  - ध्वनि (Sound) → वर्ण
  - पद या शब्द (Form)
  - वाक्य (Sentence)
  - अर्थ (Meaning)

व्यक्त वाक् → मनुष्य

अव्यक्त वाक् → पशु-पक्षियों

1. ध्वनि (Sound) भाषा की सबसे छोटी इकाई ध्वनि है। उसका ही सर्वप्रथम उच्चारण होता है।
2. पद या शब्द (Form) अनेक ध्वनियों से मिलकर पद या शब्द बनता है।
3. वाक्य (Sentence) अनेक पदों से वाक्य की रचना होती है
4. अर्थ (Meaning) वाक्य से अर्थ की अभिव्यक्ति होती है।

और यह क्रम निरन्तर चलता रहता है। इनमें से प्रत्येक के विशेष अध्ययन के कारण भाषा-विज्ञान के ४ प्रमुख अंग विकसित हो गये हैं। इनके नाम हैं

१. ध्वनि - विज्ञान (Phonology)

२. पद- विज्ञान (Morphology)

३. वाक्य - विज्ञान (Syntax)

४. अर्थ-विज्ञान (Semantics)

१. ध्वनि-विज्ञान – इसमें भाषा के मूल तत्त्व ध्वनि का व्यापक अध्ययन किया जाता है। इसमें मुख्य रूप से इन विषयों का संकलन होता है— ध्वनि क्या है? ध्वनियाँ कितनी हैं? इनका वर्गीकरण किस प्रकार किया जाता है? ये ध्वनियाँ कैसे और कहाँ से उत्पन्न होती हैं? किस प्रकार ध्वनियों का सम्प्रेषण होता है? ध्वनियों के भेद का क्या कारण है? एकाधिक ध्वनियों के संयोग से क्या परिवर्तन होते हैं? ध्वनियों में तीव्रता और मन्दता क्यों आती है? ध्वनि-नियम क्या हैं? स्वनिम, स्वनिमी आदि का निरूपण करना ।

२. पद - विज्ञान - अनेक ध्वनियों के समन्वय से पद या शब्द बनता है। पद-विज्ञान को रूप-विज्ञान, रूप-विचार और पद - विचार भी कहा जा सकता है। इसमें पद या रूप क्या है ? पद कैसे बनता है? पद के घटक अवयव क्या हैं? पदों का विभाजन किस आधार पर होता है? लिंग, विभक्ति, वचन, पुरुष, काल, प्रकृति, प्रत्यय, उपसर्ग आदि तत्त्व क्या हैं? इनकी क्या उपयोगिता है? शब्द और पद में क्या अन्तर होता है? पद-निर्माण कितने प्रकार का होता है? इत्यादि विषयों का पद-विज्ञान में विवेचन किया जाता है।

३. वाक्य – विज्ञान- जिस प्रकार विभिन्न ध्वनियों के समन्वय से पद या रूप बनता है, उसी प्रकार विभिन्न पदों या रूपों के समन्वय से वाक्य बनता है । वाक्य - विज्ञान में वाक्य की रचना किस प्रकार होती है? वाक्य में पदों का अन्वय किस प्रकार होता है? अन्वय का आधार क्या है? कर्ता, क्रिया, कर्म आदि का किस स्थान पर निवेश होता है? वाक्य के कितने भेद हैं? इत्यादि बातों का विवेचन किया जाता है। वाक्य विज्ञान को वाक्य-विचार, वाक्य-रचना - शास्त्र भी कहा जाता है। वाक्य - विज्ञान को ३ भागों में विभक्त किया गया है-

DSSSB TGT & PGT संस्कृत SCHOLAR BATCH

१. वर्णनात्मक वाक्य - विज्ञान (Descriptive Syntax)

२. ऐतिहासिक वाक्य - विज्ञान (Historical Syntax) गीली

३. तुलनात्मक वाक्य-विज्ञान (Comparative Syntax)

वर्णनात्मक वाक्य - विज्ञान में वाक्य की रचना का सामान्य विवरण प्रस्तुत किया जाता है। ऐतिहासिक वाक्य - विज्ञान में वाक्य की रचना का इतिहास भी दिया जाता है

और तुलनात्मक वाक्य - विज्ञान में दो या अनेक भाषाओं के वाक्यों का तुलनात्मक वाक्य-विज्ञान अध्ययन प्रस्तुत किया जाता है।

४. अर्थ - विज्ञान (Semantics) — जिस प्रकार मानव शरीर का सार भाग आत्मा है, उसी प्रकार भाषारूपी शरीर की आत्मा अर्थ है । अर्थ-विज्ञान को अर्थ- विचार भी कहते हैं । इसमें अर्थ किसे कहते हैं? शब्द और अर्थ का क्या सम्बन्ध है? अर्थ का निर्धारण कैसे हुआ? अर्थ-परिवर्तन क्यों और कैसे होता है? अर्थ - परिवर्तन की क्या दिशाएँ हैं? अर्थ- परिवर्तन के क्या कारण हैं? इत्यादि बातों पर विचार किया जाता है। इसका भी समकालिक, ऐतिहासिक और तुलनात्मक तीनों रूपों में अध्ययन हो सकता है। इसमें पर्यायवाची शब्द, नानार्थक शब्द, विलोम शब्द आदि का भी विवेचन किया जाता है।

भाषा - विज्ञान की शाखाएँ

भाषा विज्ञान की तीन शाखाएँ हैं—

१. वर्णनात्मक भाषा - विज्ञान (Descriptive Linguistics)
२. ऐतिहासिक भाषा - विज्ञान (Historical Linguistics)
. तुलनात्मक भाषा - विज्ञान (Comparative Linguistics)